Editorial

सम्पादकीय

भारतीय इतिहास में जातक कथाओं कि प्रमुखता

जातक शब्द का अर्थ है जन्म सम्बन्धी। विकासवाद के अनुसार किसी फूल को विकसित होने और उसकी जाति-विशेष के अस्तित्व में आने में लाखों वर्ष लग जाते हैं। तब क्या कोई भी प्राणी साठ-सत्तर-अधिक-से-अधिक सौ वर्ष-के जीवन में बुद्ध बन सकता है? इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे अनेक जन्म धारण करने होंगे; स्वयं बुद्ध को भी करने पड़े। बुद्ध होने से पूर्व अपने सभी पिछले जन्मों तथा अंतिम जन्म में उनकी संज्ञा *बोधिसत्व* रही। *बोधि* का अर्थ बुद्धत्व और *सत्व* का अर्थ प्राणी-अर्थात बुद्धत्व के लिए प्रयत्नशील प्राणी। अतएव बुद्धत्व प्राप्त करने से पहले बुद्ध 'बोधिसत्व' कहलाते हैं। *जातक* में बोधिसत्व के पाँच सौ सैंतालीस जन्मों का उल्लेख है।

जिस प्रकार अपने उपदेशों में भगवान् बुद्ध उपमाएँ देकर उन्हें रुचिकर और सुगम बनाते थे, उसी तरह लोक-कथाओं को भी सरल-सुबोध रूप देते थे। *बुद्ध जातकों* में स्वयं एक **पात्र** बनकर अतीत-कथा का विस्तार करते और शिक्षाओं से परिपूर्ण उपदेश द्वारा समस्याओं का समाधान करते थे। जातकों में बोधिसत्व ने कई योनियों-जैसे वृक्षदेवता, तपस्वी, ब्राह्मण, पक्षी, सिंह, देवता आदि-के रूप में जन्म लेकर शिक्षा दी।

इन कथाओं में मनोरंजन के माध्यम से नीति और धर्म को सरलता से समझाया गया है। *जातक* कथाओं का स्वरूप लोक-साहित्य का है। इसमें पशु-पक्षियों इत्यादि की कथाएँ भी हैं और मनुष्यों की भी। **विन्टरनित्ज** ने मुख्यतः सात भागों में *जातक* कथानकों को वर्गीकृत किया है-

1. व्यवहारिक नीति-सम्बन्धी कथाएँ
2. पशुओं की कथाएँ
3. हास्य और विनोद-परिपूर्ण कथाएँ
4. रोमांचकारी लम्बी कथाएँ
5. नैतिक वर्णन
6. कथन-मात्र
7. धार्मिक कथाएँ

इन कथाओं की शैलियाँ भी विविध हैं-कहीं गद्यात्मक वर्णन, कहीं आख्यान; कहीं किसी विषय पर कथित वचनों का संग्रह, तो कहीं महाकाव्य अथवा खण्ड-काव्य के रूप में।

भारतीय इतिहास में *जातक* कथाओं का विशेष महत्व है। बुद्धकालीन भारत के समाज, धर्म, राजनीति, भूगोल, लौकिक विश्वास, आर्थिक व सामाजिक जीवन की समस्त सामग्री *जातक* कथाओं में मिलती है। इनका स्थान न केवल भारतीय इतिहास में, बल्कि समग्र विश्व-साहित्य में भी अद्वितीय है। बुद्धकालीन भारत के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक जीवन को जानने के लिए *जातक* एक उत्तम साधन है। *जातक* की निदान-कथा से तत्कालीन भारतीय भूगोल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है। तक्षशिला की शिक्षा-प्रणाली, पाठ्यक्रम, अध्ययन-विषय, उनके व्यावहारिक व सैद्धान्तिक पक्ष, निवास-भोजन आदि का संपूर्ण विवरण *जातक* से मिलता है। वाराणसी, राजगृह, मिथिला, उज्जयिनी, श्रावस्ती, कौशाम्बी आदि प्रसिद्ध नगरों को जोड़ने वाले मार्गों तथा स्थानीय व्यापार का विस्तृत विवरण भी *जातक* में उपलब्ध है। जल-मार्गों का भी स्पष्ट उल्लेख है। जिस काल का *जातक* में चित्रण है, उसमें वर्ण-व्यवस्था प्रचलित थी; ब्राह्मणों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था; ब्राह्मण और क्षत्रिय दो वर्ण ऊँचे माने जाते थे; दास-प्रथा भी विद्यमान थी। *जातक* कहानियों से ज्ञात होता है कि व्यक्ति एक पेशा छोड़कर दूसरा अपना सकता था। उनके शिष्यों का समाज में

आदर था। वेश्याओं का भी प्रचुर वर्णन *जातक* में मिलता है। इससे पता चलता है कि उस समय लोग धार्मिक थे-यक्षों, वृक्षों, नागों, नदियों की पूजा की जाती थी। प्राचीन शास्त्र, साहित्य तथा बाद के कथा-साहित्य पर *जातक* का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है।

Dr Sanghmitra Baudh,
Editor, Bodhi-Path

Editorial (English Version)

Prominence of Jataka Tales in Indian History

The word Jataka means “related to birth.” According to the theory of evolution, it takes thousands of years for a bud to develop into a flower. Can any wise person suddenly, in one lifetime, become enlightened or a Buddha? To reach that state, one must undergo countless births. Even the Buddha had to go through numerous rebirths. Before becoming the Buddha, he lived through many previous lives and had intense resolve in his final birth.

The term resolve refers to a determined aspiration, while virtue means ethical action. Therefore, a being who aspires for Buddhahood engages in determined virtuous acts-this stage is referred to as resolve. The Jataka tales describe the lives of fifty previous births (Bodhisattva incarnations) of the Buddha during which he cultivated the virtues that eventually led to enlightenment.

Just as the Buddha inspired people through his teachings and gentle approach, similarly these stories too convey profound lessons through simple and accessible means. The Bodhisattva in these tales often takes the form of animals, birds, or sometimes remains human to address and resolve complex societal problems with wisdom and compassion. These tales portray Bodhisattvas in various forms-trees, elephants, lions, monkeys, birds, sages, kings, etc.-to illustrate moral and ethical teachings.

Through the medium of storytelling, Jataka tales simplify complex religious and ethical ideas. These are a part of oral literature. The tales include both animal fables and human stories. Scholar Foucher classified the Jataka tales into seven categories:

1. Practical Policy-Related Tales
2. Animal Stories
3. Stories with Complete Context in Philosophy and Morality
4. Tales of Yogic Accomplishment and Asceticism
5. Moral Discourses
6. Parables and Metaphors
7. Religious Narratives

These tales display a wide range of expression-sometimes narrative, sometimes poetic, sometimes philosophical, and sometimes even dramatic or lyrical. Their linguistic form varies based on content and purpose.

In Indian history, Jataka tales hold special importance. They represent the social, religious, political, economic, and moral life of ancient India. In fact, they are not just crucial to Indian history but also have a prominent place in the world’s literary and cultural heritage. Their documentation is unmatched.

Jataka tales are a valuable resource for understanding the structure and dynamics of ancient Indian society. For example, the Vessantara Jataka provides insights into the political life of the time. From them, we learn about ancient India's education system, curriculum, subjects, and practical and theoretical knowledge-covering aspects such as residence, food habits, and trade.

These stories vividly describe the roads and urban planning of famous cities like Vaishali, Rajgriha, Mithila, Mathura, Kapilavastu, and Kausambi, and depict the local markets and waterways. Illustrations from Jataka tales also reveal ancient scripts and linguistic forms.

The Brahmins of the time held a high status in society. In fact, Brahmins and Kshatriyas were considered the most respected classes. Slavery was prevalent. From these tales, we gather that people could be bought and sold like commodities, and even a prince could be traded.

The Buddha's disciples were from diverse social backgrounds. The teachings in these tales often revolve around moral values. From them, we learn that during those times, people were deeply religious. Worship of kings, trees, snakes, and rivers was common.
Jataka tales had a significant influence on ancient Indian philosophy, literature, and subsequent narrative traditions. They are a bridge between early oral traditions and the later classical literary culture of India.

Dr Sanghmitra Baudh,
Editor, Bodhi-Path